'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ११५ | वाराणसी, गुरुवार, ८ अक्टूबर, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

प्रार्थना-प्रवचन

जम्मू-कश्मीर २०-९-'५९

'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर

अद्वैत के पैगाम को लेकर शंकराचार्य यहाँ आये थे और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि श्रीनगर में एक पहाड़ पर उनकी याददाश्त में भगवान शंकर का मन्दिर बनाया गया है। मलबार का एक लड़का-शंकराचार्य ३२ साल की उम्र में चल बसा और आज मेरी उम्र ६४ साल की है। इसलिए मैं उन्हें लड़का ही कह सकता हूँ, ३२ से भी कम उम्र में वे यहाँ आये होंगे। हिन्दुस्तान के बिलकुल दक्षिण किनारे का एक लड़का उस जमाने में कश्मीर तक पैदल-पैदल आया, सिर्फ यही बात समझाने के लिए कि इन्सान-इन्सान के बीच और इन्सान और भगवान में भी कोई फर्क नहीं है। इन्सान और भगवान के बीच अगर कोई फर्क है तो सिर्फ मिकदार का फर्क है। वह कुल है, तुम जुज़ हो। इस तरह परमात्मा, इन्सान और कुदरत—तीनों एक ही नूर की चीजें हैं। तीनों में एक ही मादा है। सिर्फ यही बात समझाने के लिए वह शख्स यहाँ आया और उसने हिमालय में, कैलाश में जाकर देह छोड़ा। इस बात को यहाँके लोग याद करते हैं और उसके साथ मेरा भी नाम जोड़ देते हैं। उनके साथ मेरी कोई तुलना ही नहीं हो सकती है। वे बड़े आलिम थे, मैं तो एक खिदमतगार हूँ। अल्ला का बन्दा हूँ। मैं इल्म का दावा नहीं कर सकता हूँ। बल्कि मुझ में जितना इल्म है, उसके अमल का दावा करता हूँ। वे बड़े आलिम थे और मैं बुजुर्गों के दिये हुए इल्म पर अमल करने की कोशिश करनेवाला, उनकी रहनुमाई में चलनेवाला उनका एक शागिर्द हूँ। इसलिए उनकी और मेरी कोई तुलना नहीं हो सकती है। किसीके साथ किसीकी तुलना करनी ही क्यों चाहिए? सबका अपना स्वतंत्र मूल्य होता है। तुलना से हम उस मूल्य को घटाते हैं। खैर, शंकराचार्य बहुत बड़े आलिम थे। मैं आलिम नहीं हूँ।

घुमानेवाला घुमा रहा है

मैं तो नाचीज हूँ, लेकिन मैं जो मिशन लेकर आया हूँ, वह नाचीज नहीं है। बल्कि वह बहुत बड़ी चीज है। उससे न सिर्फ कश्मीर को, बल्कि हिन्दुस्तान को और दुनिया को नजात मिलनेवाली है। यह एक ऐसा ऊँचा विचार है, जिसे हम ऊँचा नहीं रख सकते हैं, बल्कि हमें उस ऊँचाई तक पहुँचना होगा। उसपर अमल करना होगा। ऐसा एक ऊँचा विचार लोगों के सामने रखने की प्रेरणा भगवान ने मुझे दी है। आप चाहें तो उसे "इलहाम" दैवी प्रेरणा कह सकते हैं। मैं बड़े-बड़े शब्द इस्तेमाल करना नहीं चाहता हूँ। मामूली शब्द ही इस्तेमाल करना चाहता हूँ, लेकिन आप इसे 'इलहाम' कह सकते हैं। अगर यह नहीं होता तो मैं अपने में घूमने की ताकत नहीं पाता। मैंने आठ वर्षों से देखा है और कश्मीर में भी, जैसा कि अभी भाई साहब ने कहा है, हमें कई मुसीबतों से गुजरना पड़ा, लेकिन मुझपर उनका कोई भार नहीं है। जैसे गुल का कोई भार नहीं होता है, खुशी ही होती है, वैसे जब मैं याद करता हूँ कि इन चार महीनों में मुझे कहाँ-कहाँ जाना पड़ा तो मैं खुशी का ही एहसास करता हूँ। मुझे किसी भी किस्म की तकलीफ का एहसास नहीं होता है। इसका एक कारण यह भी है कि यहाँके लोग बड़े मेहमानवाज हैं। उन्होंने हमें अच्छी तरह से सँभाला, हिफ़ाजत से रखा, कोई कमी नहीं रहने दी। लेकिन सबसे बड़ी चीज मैं यह मानता हूँ कि वह जो घुमानेवाला है, वह मुझे घुमा रहा है।

जीयेंगे खिदमत करते-करते, मरेंगे हँसते-हँसते

मैं आपके सामने एक बड़ी बात रखनेवाला हूँ कि दुनिया के मसले कैसे हल हो सकते हैं। अभी भाई साहब ने मुझसे पूछा कि कश्मीर के आपके अनुभवों का निचोड़ बताइयेगा। हमने कहा कि निचोड़ यह है कि दुनिया के मसले रूहानियत से ही हल होनेवाले हैं, सियासत से कतई हल होनेवाले नहीं हैं। सियासत नाचीज है। जितना साइन्स बढ़ रहा है, उतनी सियासत फीकी पड़ रही है। सियासत और साइन्स दोनों एक होंगे तो समझना चाहिए कि दुनिया खत्म ही होनेवाली है, इसलिए हमें रूहानियत और साइन्स इन दोनों को जोड़ना चाहिए। उन्होंने पूछा कि रूहानियत से मसले किस तरह हल किये जा सकते हैं? रूहानियत कैसे प्रकट की जा सकती है? तो हमने कहा कि गाँव-गाँव के लोगों को यह एहसास हो कि हमारा गाँव एक कुनबा है। यूँ समझकर वे जमीन की मिल्कियत मिटा दें, शामिलात मिल्कियत मानें, जमीन बाँट दें, शख्सी मिल्कियत न रहने दें। गाँव की एक सभा बनायें, जो यह जिम्मा उठाये कि गाँव के हर शख्स को काम या खाना देना होगा। गाँव की दस्तकारियाँ बढ़ाने का काम भी वह करे। इस तरह गाँव-गाँव अपना गाँव याने एक स्टेट ही है, ऐसा महसूस करके अपना मंसूबा बनाये। फिर हम कहाँ रहें, भारत में,

www.vinoba.in

एशिया में या दुनिया में, यह सवाल ही नहीं रहेगा। हम अपनी जगह हैं और ईश्वर की गोद में हैं। बेवकूफ मुसाफिर, टूरिस्ट यहाँ आकर लोगों से पूछते हैं कि आपको कहाँ जाना है? तांगे-वाले से वे पूछते हैं कि तुम कहाँ जाना चाहते हो? कोई चिड़िया होती तो बताती कि फलाने घोसले में जाना चाहती हूँ। लेकिन हमें कहाँ जाना है? हमें अपने खेत में काम करना है, अपनी जगह नहीं छोड़नी है और अल्लाह की गोद में रहना है। तुम टूरिस्ट आओ और जाओ, हमसे कोई मतलब नहीं। हमें परमात्मा की, इन्सान की सेवा करनी है। हम सारे गाँववाले इकट्ठा हुए हैं। हम सब की खिदमत करते हैं। कुदरत की, इन्सान की और अल्लाह की खिदमत करते-करते हम जीयेंगे और जब अल्लाह हमें बुलायेगा, तब हँसते-हँसते उसके पास जायँगे, रोते-रोते नहीं। अगर हमसे पूछा जाय कि तुम्हें कहाँ जाना है तो हम कहेंगे कि परमात्मा के पास जाना है। जब तक वह नहीं बुलायेगा, तब तक हम अपने गाँव में प्यार से रहेंगे और अपने गाँव को बहिश्त बनाने की कोशिश करेंगे। रूहानियत और साइन्स की मदद से हम इस दुनिया में जन्नत ला सकते हैं। वह लाने की हमारी कोशिश चलेगी। हमारा किसीके साथ कतई झगड़ा-फसाद नहीं है। यह बात गाँव-गाँव के लोग समझें और सरकार भी गाँववालों को यह बात समझाने की कोशिश करे। लोग अपना मंसूबा खुद बनायें।

गाँव पार्टी-मुक्त रहें

कोई चीज ऊपर से लादी जाती है तो हम या तो ऊपरवालों की तारीफ करते हैं या उनके खिलाफ बोलते हैं। ऐसा नहीं होना चाहिए। बल्कि हमें यह महसूस करना चाहिए कि हम अपने गाँव को बनायेंगे। गाँव में सियासी जमातों को दखल नहीं देने देंगे। सियासत का गाँव से कोई ताल्लुक नहीं है। ऊपर के तबके में आप सियासत रखना चाहते हैं तो रखें, लेकिन गाँव की तरक्की के साथ सियासत का कोई ताल्लुक नहीं है। अब तो सियासी पार्टियों को मिलकर तय करना चाहिए कि हमारे रवैये ऐसे हैं कि हमें देहात में दखल नहीं देना चाहिए। बल्कि देहात को प्यार से मुकम्मिल बनाने का रवैया हमें अख्तियार करना चाहिए।

हँसते-हँसते जायँ

गाँव में हिन्दू, मुसलमान, सिख वगैरह सब मजहबों के लोग भगवान का नाम लेने में प्यार से इकट्ठा हों। रूहानियत और साइन्स दोनों के लिए यह जरूरी है। मुझे कभी-कभी यह देखकर दुख होता है कि और कामों के लिए तो हम इकट्ठा हो सकते हैं, लेकिन जहाँ भगवान का नाम लेने का मौका आता है, वहाँ हिन्दू, मुसलमान, सिख सब अलग-अलग हो जाते हैं। मैं सोचता हूँ कि भगवान कम्बख्त कैसा है कि उसका नाम लेने का मौका आया तो हमें अलग होना पड़ता है। मैं कहना चाहता हूँ कि और कामों में अलग होना मैं समझ सकता हूँ, लेकिन परमात्मा का नाम लेने में हमें एक होना चाहिए। इस तरह हम हर गाँव में परमात्मा का नाम लेने में इकट्ठा हों और उस वक्त कुरानशरीफ, गीता, ग्रन्थ-साहब, धम्मपद, बाइबिल वगैरह किताबों का मुताला मिलकर करें। एक मिला-जुला समाज बनायें। कुरानशरीफ में कहा है, "उम्मतुम् वाहिद" तुम सब एक उम्मत हो। जितने भी पैगम्बर, नबी, वली, ऋषि, मुनि, साधु, महापुरुष हो गये, उन सबकी एक ही जमात है, एक ही कौम है। यह इजहार कुरानशरीफ ने दिया है। गीता में भी कहा है कि तुम कहींसे भी आते हो, मेरी तरफ ही आते हो। "मम वर्त्मानुवर्तन्ते मनुष्याः पार्थ सर्वशः" हे अर्जुन, सब इन्सान सब बाजुओं से मेरी तरफ ही आ रहे हैं। याने बिल्कुल कुरानशरीफ ने जो बात कही—'कुल्लुन् इलैना राजीऊनः' वही बात गीता कहती है। सब अच्छे-अच्छे धर्मग्रन्थ एक ही बात कहते हैं। हम सब प्यार से एक साथ बैठकर उन धर्मग्रन्थों का मुताला करें। हम एक साथ गायें, एक साथ खायें, एक साथ खेलें, कूदें, नाचें, एक-दूसरे पर खूब प्यार करें और जाते समय हँसते-हँसते चले जायँ। मेरी सिर्फ एक ही ख्वाहिश है कि परमेश्वर के पास जाते समय रोने का मौका न आये, हम हँसते-हँसते चले जायँ। यूँ सोचकर कि हम भगवान से मिलने जा रहे हैं, हमें खुशी होनी चाहिए। हमें अन्दर से यह यकीन होना चाहिए कि हम भगवान के पास पहुँच रहे हैं तो अब उनका प्यार हमें हासिल होनेवाला है। हम उनके हुक्म-बरदार हैं, उनके कदमों की खिदमत करने की हमने कोशिश की है, इसलिए हमें कोई खौफ नहीं है, कोई डर नहीं है। बिल्कुल बेखौफ, बेडर, जैसा कि कुरानशरीफ ने कहा है 'ला खौफु? अलैहिम वला हुम् यह जनून्' निर्भय होकर हम परमात्मा के पास हँसते-हँसते चले जायँ।

कश्मीरवाले : ठंडे दिमागवाले

गाँव-गाँव के लोगों को हम इस तरह तैयार करेंगे तो जो सियासी मसले हैं, वे हवा में उड़ जायँगे। कश्मीर-वैली में हमें जो अनुभव आया, उससे यही महसूस किया कि कश्मीर-वैली के लोग ठंडे मिजाज के हैं, गरम मिजाज के नहीं। वैसे चन्द लोग तो गर्म मिजाजवाले होते ही हैं। उनके बिना जिन्दगी में जायका नहीं रहता है। जैसे खाने में थोड़ी सी मिर्च रहे तो जायका मालूम होता है, लेकिन मीठी सी चीज ज्यादा हो तो उसके साथ थोड़ीसी मिर्च, थोड़ा सा कड़ुआपन चल जाता है। क्योंकि बाकी सारा मीठा ही मीठा मामला होता है। ऐसा ही अनुभव हमें कश्मीर-वैली में आया। और इस किस्म का तजुर्बा होगा, ऐसा मुझे पहले से अन्दाजा नहीं था, यह मैं कबूल करता हूँ। वैसे पहले से ही अन्दाजा होना चाहिए था। मुझमें इतनी अक्ल होनी चाहिए थी कि जहाँ कुदरत ठंडी है, वहाँ लोगों का दिमाग भी जरूर ठंडा होगा। लेकिन फिर भी मुझे पहले अन्दाजा नहीं था और वहाँ जाने पर मैंने देखा कि लोगों में बहुत प्यार है, किसी प्रकार की कौमियत का खयाल नहीं है। वैसे चंद लोग जो सियासत में पड़े हैं, उनकी बात मैं छोड़ देता हूँ, लेकिन आम लोग मेहमा-नवाज हैं। इन्सानियत को परखनेवाले हैं, रूहानियत की कद्र करनेवाले हैं और खूबसूरत दिलवाले हैं।

हिन्दुस्तान : एक दुनिया

जम्मू के लोगों से हमने कहा कि तुम गर्म मुल्क में रहते हो तो गर्म मिजाज मत रखो। तुम इधर से कश्मीर के साथ और उधर से हिमाचल प्रदेश के साथ जुड़े हुए हो। दो ठंडे प्रदेशों के साथ जुड़े हुए हो और यहाँपर झेलम, चिनाब और रावी जैसी बड़ी नदियाँ बहती हैं तो कभी मिजाज गर्म हो जाय तो नदी में जाकर ठंडे पानी से नहा लो। हिन्दुस्तान के साथ तुम्हारा प्यार है। वह प्यार कायम रहे और बढ़े, यह मैं चाहता हूँ, लेकिन हिन्दुस्तान और दुनिया में कोई फर्क मत करो। एक जमाने में हम जय-हिन्द कहते थे और ठीक ही कहते थे, क्योंकि हिन्दुस्तान में एक ही जमात नहीं है, मुख्तलिफ जमातें, मजहब वगैरह हैं। इस कश्मीर में हिन्दुओं के लिए अमरनाथ का मंदिर है, वैसे

ही उधर अजमेर में मुसलमानों के लिए अजमेर का दरगाह-शरीफ है और बौद्धों के लिए बोधगया और सारनाथ हैं। ईसाइयों के लिए केरल में सेंट टॉमस का मौंट है। ईसामसीह के पहले शिष्यों में से एक शिष्य टॉमस हिन्दुस्तान में आया था और यहीं मरा। इस तरह हिन्दुस्तान में मुख्तलिफ जमातें रही हैं, इसलिए हिन्दुतान पर प्यार करने का मतलब है दुनिया पर प्यार करना। हिंदुस्तान मुक्तसर, थोड़े में दुनिया ही है। इसलिए हिन्दुस्तान पर हम प्यार करेंगे तो कौमियत में गिरफ्तार नहीं होंगे, क्योंकि यह वसी देश है।

चीनवाले समझें

दस हजार साल का पुराना इतिहास हमारे पीछे है। यहाँपर सैकड़ों जमातें आयी हैं, अब भी आ रही हैं। अभी आपने देखा कि तिब्बत से लोग डर के मारे भागे और इन्हें कहाँ पनाह मिली? हिन्दुस्तान में पनाह मिली। उनकी सियासत से हमें कोई ताल्लुक नहीं है, लेकिन वे मारे जा रहे थे, भाग रहे थे और पनाह चाहते थे तो हमने पनाह दी। यह चीज चीनवालों को ठीक नहीं लगी। लेकिन मैं चीनवालों से कहना चाहता हूँ कि मेरे देश की इज्जत इसके साथ जुड़ी हुई है। यह मेरा देश वह देश है, जिसने गौतम बुद्ध को जन्म दिया। यह देश किसीसे दुश्मनी करनेवाला नहीं है। इसलिए चीनवालों के साथ इसका वही प्रेम रहेगा, जो पुराने जमाने से चला आ रहा है। लेकिन हम तिब्बत के लोगों को पनाह नहीं देते तो हम इन्सानियत को खोये हुए साबित होते।

पुराने जमाने में यहाँपर ईरान से पारसी लोग भाग-कर आये। करीब १३ सौ साल पहले की बात है। वे बम्बई के किनारे उतरे और उन्हें यहाँ पनाह मिली। आज दुनिया में पारसी करीब एक लाख होंगे और वे हिन्दु-स्तान में हैं। उनका एक मजहब है, जिसे जरतृष्ट्र का धर्म कहते हैं। वे लोग हिन्दुस्तान में हमलावर बनकर नहीं आये थे, पनाह माँगने आये थे तो हमने उन्हें पनाह दी। जैसे पुराने जमाने में हमने उनको पनाह दी, उनकी सियासत से हमारा कोई वास्ता नहीं था, हमारा तो इन्सानियत से वास्ता था। वे आफत में थे और भाग-कर आ रहे थे, इसलिए हमने उन्हें जगह दी। भारत देश का मतलब ही है—सबका भरण करनेवाला देश। इसलिए इस देश के दरवाजे सबके लिए खुले हैं। हमने तिब्बतवालों को इसीलिए पनाह दी। लेकिन मैं चीन-वालों को यकीन दिलाना चाहता हूँ कि गौतम बुद्ध का पैगाम उठाने के लिए कूवत के साथ कोई देश राजी हो तो हिन्दुस्तान राजी है और कोई देश राजी हो या न हो। गौतम बुद्ध का पैगाम हिन्दुस्तान ने जितना माना, शायद ही किसी देश ने माना होगा। अहिंसा की बात हिन्दुस्तान में जितनी पनपी, उतनी शायद ही दूसरे किसी देश में पनपी होगी। यह बात यहाँके लोगों के खून में जितनी गहरी पैठी है, उतनी दूसरे देश में नहीं दिखायी देती है। हमने बुद्ध-धर्म को यहाँसे बिदा नहीं किया, बल्कि यहाँका शान्ति का पैगाम पहुँचाने के लिए बाहर भेजा। मैं फक्र के साथ कहना चाहता हूँ कि यहाँसे बुद्ध भगवान की नसीहत लेकर जो मिशनरी बाहर गये, वे फौज लेकर नहीं गये। वे तिब्बत, चीन, जापान, इण्डोनेशिया, मंगोलिया, सीलोन, श्याम, बर्मा वगैरह देशों में गये तो उन्होंने वहाँपर अपनी हुकूमत कायम नहीं की, बल्कि वे वहाँ इल्म और प्यार लेकर गये और इसी तरह से चीन से यहाँपर यू-एन-त्संग जैसे बड़े-बड़े यात्री आये। इसलिए चीन-वालों के साथ हमारे ताल्लुक कभी नहीं बिगड़ सकते हैं। मेरी आत्मा, हिन्दुस्तान की आवाज कह रही है कि हम चीनवालों को यह यकीन दिलाना चाहते हैं, लेकिन हमने तिब्बतवालों को पनाह दी तो इन्सानियत के लिए दी, इसको वे समझें।

सर्वोदय का मकसद

भारत इण्टरनेशनल नेशन, अन्तर्राष्ट्रीय राष्ट्र है, मामूली राष्ट्र नहीं, इसलिए हम दस साल पहले "जय-हिंद" कहते थे तो गलत नहीं था। लेकिन दस साल में हम इतने आगे बढ़े कि आज यहाँका बच्चा-बच्चा 'जय-जगत्' बोलने लगा है। यूरोप के लोग जब इस बात को सुनते हैं तो उन्हें खुशी और ताज्जुब मालूम होता है कि हिन्दुस्तान के बच्चे किस तरह यह वसी खयाल कबूल कर सकते हैं! मैं कहना चाहता हूँ कि हिन्दुस्तान के बच्चे "जय-जगत्" इसलिए कबूल करते हैं, क्योंकि ऋषि-मुनियों का, नबीयों का पैगाम यहाँकी हवा में फैला हुआ है। इसलिए हिन्दुस्तान का बच्चा छोटी बात मुश्किल से समझ सकता है। मैं दूसरे देश से अलग हूँ, इसको नहीं समझ सकता है। लेकिन मैं कुल दुनिया का हूँ और दुनिया हमारी है, इस बात को आसानी से समझ सकता है। सर्वोदय का मकसद यही है कि वह देश-देश के बीच जो दीवालें खड़ी की गयी हैं, उन्हें तोड़ना चाहता है। जैसे आज हम हिन्दुस्तान के एक सूबे से दूसरे सूबे में जा-आ सकते हैं, प्यार से कहीं भी रह सकते हैं, तिजारत कर सकते हैं, दर्शन के लिए, इल्म पाने के लिए जा सकते हैं, वैसे ही दुनिया में इन्सान कहीं भी जा-आ सकता है, यही हमें करना है। जब तक यह नहीं होगा, तब तक सर्वोदय माननेवाले लोग चैन नहीं पा सकते हैं। इसलिए 'जय-हिन्द' अच्छा ही विचार था, उसमें कोई कौमी खयाल नहीं था, तब भी देखते-देखते हम 'जयहिन्द' से 'जय-जगत्' तक पहुँच गये और अभी भाई बख्शी रशीद ने अपनी तकरीर 'जय-जगत्' कह-कर शुरू की। इतनी वह चीज फित्रती, स्वाभाविक है। बीच में अंग्रेजों के राज में उन्होंने कौमों के बीच झगड़े का जहर फैलाया, 'डिवाइड एन्ड रूल' की नीति चलायी, इससे हमारे दिमाग बिगड़ गये, लेकिन अब हमारी असली चीज बाहर आ रही है और 'जय-जगत्' का संदेश हिन्दुस्तान कबूल कर रहा है।

जय-जगत्

'जय-जगत्' यह कोई नारा नहीं है। नारे एक-दूसरे के साथ टकराते हैं। इसलिए यह नारा नहीं, बल्कि अरबी में जिसे 'कौल' कहते हैं या संस्कृत में 'मन्त्र' कहते हैं, वह है। जैसे गायत्री-मन्त्र, अलाफातिहा मन्त्र, बिस्मिल्ला हि रहमान, निर्रहीम यह मन्त्र है, ऐसे ही 'जय-जगत्' मन्त्र है, 'कौल' है, यह मन्त्र हिन्दुस्तान का बच्चा-बच्चा बोल रहा है।

मैं आज ज्यादा बोलना नहीं चाहता हूँ, बल्कि सिर्फ प्रेम प्रगट करना चाहता हूँ। इन चार महीनों में मुझसे कोई गलत काम हुआ होगा या कुछ गलत लब्ज मेरे मुँह से निकला होगा, मुझे तो याद नहीं, फिर भी निकला होगा—तो आप मुझे माफ कीजिये और परमात्मा के पास मेरे लिए दुआ माँगिये। ०००

[गतांक से समाप्त]

www.vinoba.in

स्वागत-प्रवचन

कठुआ (जम्मू-कश्मीर) १९-९-'५९

सनातनो नित्य-नूतनः

आप सब लोगों के दर्शन से मुझे बड़ी खुशी होती है और उस दर्शन से मुसाफिरी की थकान मिटती है। आठ साल से हमें हर रोज यह नित-नया आनन्द हासिल हो रहा है। जैसे सूर्यनारायण रोज उगता है तो वह पुराना होने पर भी पुराना नहीं होता है। रोज उसकी तस्वीर खींची जाय तो नयी तस्वीर मिलेगी। वैसे ही हमें भी रोजन या स्थान, नया मकान मिलता है। हवा, पानी, कुदरत सब नया मिलता है।

नित-नया जीवन

हम रोज के जीवन में ताजगी महसूस करते हैं और हमें बुढ़ापा आता ही नहीं, बल्कि हमें लगता है कि हम सनत्कुमार के जैसे हैं, कायम के लिए कुमार हैं। शुरुआत में हम जो आनन्द महसूस करते थे, उससे कम आनन्द आज नहीं है। जिंदगी में मनुष्य ताजगी का एहसास खो बैठेगा तो उसे जिंदगी दूभर होगी, बोझ होगी, उसका मजा नहीं रहेगा। चाहे मनुष्य जीये तो भी उसकी जिन्दगी में खुशबू नहीं रहेगी। जिस क्षण मनुष्य महसूस करेगा कि मैं पुराना हो गया, उस क्षण वह मर ही गया, ऐसा समझो, भले ही उसका जिस्म कायम रहे। वही मनुष्य सचमुच में जीता है, जो हर क्षण नया जीवन जीता है, प्रतिक्षण नया आनन्द लेता है।

बच्चे जैसा उत्साह

बच्चे ने कोई नयी चीज देखी तो उसे बड़ी खुशी होती है। पहाड़, पेड़, चिड़िया हर चीज देखकर वह खुश होता है, बच्चा रो रहा है। माँ उसका रोना बंद करना चाहती है, लेकिन वह चुप नहीं होता है तो फिर माँ कहती है, चिड़िया देख। बच्चा उसकी तरफ देखता है और उसका रोना बंद हो जाता है। चिड़िया में जो चैतन्य है, उसका उसे आकर्षण होता है। जिसका जीवन पुराना हो गया, उसे सृष्टि में वही-वही चीज दिखाई देती है। वही पहाड़, वही पेड़, वही आसमान, वही मकान, वही जानवर, यह सब देखकर वह ऊब जाता है और उसे उत्साह नहीं मालूम होता है। बच्चे में जो उत्साह होता है, वही उत्साह मरने के दिन तक बना रहा तो हमारी जिन्दगी में खुशबू, आनन्द रहेगा।

नित्य नयापन

यह जो नित्य नयापन है, वह आत्मा का लक्षण है। हमारे यहाँ एक शब्द चलता है, सनातन धर्म, लेकिन सनातन की व्याख्या यह की गयी है कि "सनातनो नित्य-नूतनः" सनातन याने नित्य नूतन। सृष्टि में जो नित्य नयापन है, वही हम अपने जीवन में महसूस करेंगे तो सृष्टि के साथ एकरूप हो सकेंगे। लेकिन नित्य नया जीवन उसी को मिलेगा, जो नित्य निरन्तर ज्ञान प्राप्त करेगा। जैसे हम हर रोज खाते हैं, वैसे क्या हर रोज नया ज्ञान प्राप्त करते हैं? कुछ लोग समझते हैं कि मैट्रिक या बी० ए० पास करके नौकरी में लगे तो अब कुछ नया ज्ञान हासिल करने का नहीं है। लेकिन समझना चाहिए कि बी० ए० पास किया याने ज्ञान-समुद्र को पार नहीं किया, बल्कि तैरना सीखा। जिसने युनिवर्सिटी की डिग्री हासिल की, उसने ज्ञान नहीं हासिल किया, बल्कि ज्ञान पाने की शक्ति हासिल की। अब उस शक्ति से वह ज्ञान पा सकता है। बच्चे को वह शक्ति हासिल नहीं थी। माता-पिता और गुरु की मदद के बिना वह ज्ञान हासिल नहीं कर सकता था। लेकिन अब उसे सर्टिफिकेट मिला याने ज्ञान पाने की शक्ति हासिल हुई। लेकिन जहाँ सर्टिफिकेट मिला, वहाँ उसने ज्ञान पाना छोड़ दिया। अगर कोई पुराने सरमाये (पूँजी) पर तिजारत करता रहे, उस सरमाये में इजाफा न करे तो उसके धंधे में गिरावट आयेगी। उसी तरह हमने पुराना ही ज्ञान कायम रखा। नया ज्ञान हासिल नहीं किया तो हम जीये ही नहीं, ऐसा समझना चाहिए।

नाक में साँस चलती है तो मनुष्य जीता है, यह कहना ठीक नहीं है। लुहार के भाते में भी साँस चलती है, जैसे हम रोज खाते हैं और उससे खून में रोज नया-नया रस आता है, उसी तरह ज्ञान पाने की क्रिया रोज चलनी चाहिए। रोज खाने से और सोने से शरीर में ताजगी रहती है। उसी तरह जिस दिन हमने ज्ञान नहीं पाया, वह दिन नीरस, शुष्क हो जायगा। भगवान ने ज्ञान सुनने के लिए कान दिये हैं, पढ़ने के लिए, देखने के लिए आँख दी है और चिन्तन, मनन करने के लिए मन दिया है। जैसे हम केला खाते हैं तो उसमें से जिस चीज का रस बनाना है, उसका रस बनाते हैं, उसे हजम करते हैं और जो चीज फेंकनी है, उसे फेंकते हैं, वैसे ही हम जो पढ़ेंगे, सुनेंगे, उसमें से अच्छा हिस्सा जज्ब कर लेंगे, खराब हिस्सा छोड़ देंगे। तब वह चीज अपनी बन जायगी और उससे जीवन में ताजगी रहेगी। हर रोज सोने से पहले हमें सोचना चाहिए कि आज हमने अपनी पूंजी बढ़ायी या नहीं?

जैसे रोज ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, वैसे ही रोज कुछ न कुछ सेवा भी करनी चाहिए। अगर हम इन्सान होकर भी अपने लिए ही जीयें, दूसरों के लिए कुछ न करें तो समझना चाहिए कि हमारा आज का दिन जानवर का जीवन जीने में गया। अगर हमने ऐसी सेवा की कि जिसमें बदला चाहा तो समझना चाहिए कि हमने अच्छी रसोई बनाकर उसमें जहर मिलाया। इन दिनों सेवा तो चलती है, लेकिन उसमें जहर मिलाया जाता है। सेवा करने में नाम, कीर्ति, पद आदि का खयाल रहता है। इस जिन्दगी में नहीं तो मरने के बाद स्वर्ग में हमारी सीट रिजर्व रहे, यह खयाल रहता है। इस तरह अपने लिए कुछ कमाने के खयाल से सेवा की गयी तो सेवा का आनन्द, आत्म-समाधान चला जाता है। इसलिए हमारे हाथ से रोज ऐसी सेवा हो, जिससे कुछ पाने की इच्छा न हो तो हमारी जिंदगी में ताजापन रहेगा। इस तरह रोज ज्ञान प्राप्त करने से और निष्काम सेवा करने से बच्चे की जिन्दगी में जो रस, ताजगी है, वही हमारी जिन्दगी में बुढ़ापे तक रहेगी। ◆◆◆

अनुक्रम

१. 'जय-हिन्द' से 'जय-जगत्' की ओर.
जम्मू-कश्मीर २० सितम्बर '५९ पृष्ठ ७०७
२. सनातनो नित्य-नूतनः
कठुआ १९ सितम्बर '५९ ,, ७१०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी

www.vinoba.in